75 P
392
H

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1216
10/81

आह्वानांक Call No.

अवाप्ति सं० Acc. No. 392

गांधी की आंधी

राष्ट्रीय कविताओं का
अपूर्व संग्रह

आज़ादी की लड़ाई

चहचहाना भूल जाओगी चमन खतरे में है।
बुलबुलो क्या देखती हो, खेल जाओ जानपर॥

संग्रहकर्ता व प्रकाशक-
चन्द्रभान गुप्त
मेरठ

प्रथम वार]　　मार्च सन् ३०　　[मूल्य)॥

व्यापारियों को २) सैकड़ा

Model Printing Works, Agra.

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 392
Date 9.12.71
GOVT. OF INDIA
891.491
G891G

आज़ादी की लड़ाई

गाना नं० १

सुना है तारे हैं तुमने लाखों हमें जो तारो तो हम भी जानें।
उबारा गजराज ग्राह से है हमें उबारो तो हम भी जानें॥
निशाचरों को संहारा तुमने उतारा पृथ्वी का भार तुमने।
हमारे सिर भी है बोझ भारी उसे उतारो तो हम भी जानें।
हरा अहिल्या का शाप तुमने मिटाया शबरी का ताप तुमने।
हमारे भी शाप ताप भगवन् अगर निवारो तो हम भी जानें॥

गाना नं० २

हे नटवर निराली है माया तुम्हारी।
समझ कौन सकता है महिमा तुम्हारी॥
जिसे चाहा जैसा बना कर निकालो।
यह सब सृष्टि है नाट्यशाला तुम्हारी॥
भिकारी है कोई तो है कोई राजा।
नचाती नटों को है माया तुम्हारी॥
नटों में कभी तुम जो आते हो नायक।
तो ले आती है तुमको इच्छा तुम्हारी॥
जो हैं प्रेमी जन वह यह चाहते हैं।
हृदय में रहे प्रेम प्रतिमा तुम्हारी॥

गाना नं० ३

शरण में आये हैं हम तुम्हारी, दया करो हे दयालु भगवन्।
संभालो बिगड़ी दशा हमारी, दया करो हे दयालु भगवन्॥
न हम में बल है न हम में शक्ति, न हम में साधन न हम में भक्ति।
तुम्हारे दर के हैं हम भिखारी, दया करो हे दयालु भगवन्॥
जो तुम हो स्वामी तो हम हैं सेवक, जो तुम पिता हो तो हम हैं बालक
जो तुम हो ठाकुर तो हम पुजारी, दया करो हे दयालु भगवन्॥
प्रदान करदो महान् शक्ति, भरो हमारे में ज्ञान शक्ति।
तभी कहाओगे सर्वाधारी, दया करो हे दयालु भगवन्॥
न होगी जबतक दया की दृष्टि, न होगी जब तक कृपा की वृष्टि।
न तुम भी तब तक हो न्यायकारी, दया करो हे दयालु भगवन्॥
हमें तो बस टेक नाम की है, पुकार यह राधेश्याम की है।
तुम्हारी तुम जानो निर्विकारी, दया करो हे दयालु भगवन्॥

गाना नं० ४

विजयी विश्व तिरंगा प्यारा,
झंडा ऊंचा रहे हमारा। टेक

सदा शक्ति बरसानेवाला, प्रेम-सुधा सरसानेवाला;
वीरों को हरषानेवाला, मातृभूमि का तन-मन सारा। झंडा०
स्वतंत्रता के भीषण रण में, लखकर बढ़े जोश क्षण-क्षण में;
कांपे शत्रु देखकर मन में, मिटजाय भय-संकट सारा। झंडा०

इस झंडे के नीचे निर्भय, लें स्वराज हम अविचल निश्चय;
बोलो भारत माता की जय, स्वतंत्रता हो ध्येय हमारा। झंडा०
आओ प्यारे वीरो आओ, देश-धर्म पर बलि-बलि जाओ;
एकसाथ सब मिलकर गाओ, प्यारा भारत देश हमारा। झंडा०
इसकी शान न जाने पाए, चाहे जान भले ही जाए;
विश्व-विजय करके दिखलाए, तब होवे प्रण पूर्ण हमारा। झंडा०

गाना नं० ५

हमारा हक है, हमारी दौलत, किसीके बावा का ज़र नही है।
है मुल्क भारत वतन हमारा, किसी की ख़ाला का घर नही है।
हुकूक़ अपने ही चाहते हैं, न कुछ किसी का बिगाड़ते हैं।
तुझे तो ऐ ख़ुदग़रज़, किसी की भलाई मद्दे-नज़र नहीं है॥
हमारी नस नस का ख़ून तूने बड़ी सफ़ाई के साथ चूसा।
है कौनसी तेरी पालिसी वह कि जिसमें घोला ज़हर नहीं है॥
जो बेगुनाहों को है सताता, कभी न वह सुख से बैठ पाता।
बड़े बड़े मिटगए सितमगर, क्या इसकी तुझको ख़बर नहीं है॥
ग़ज़ब है हम बेकसों की आहें, ज़मीन औ आसमाँ हिलादें।
ग़लत हैं समझे 'कमल' जो समझेकि आह में कुछ असर नहीं है॥

गाना नं० ६

दो फूल साथ फूले क़िस्मत जुदा जुदा है।
नौशे के एक सर पै एक क़ब्र पै चढ़ा है॥

दो भाइयों को देखो, आपस में हैं हक़ीक़ी।
एक शख़्स नामवर है एक फिर रहा गदा है॥
दो मुर्ग़ साथ आये देखो तो इनकी क़िस्मत।
सदक़े में एक छूटा एक होरहा ज़िबह है॥
निकले सदफ़ से मोती दो साथ देखो कैसे।
एक पिस रहा खरल में एक ताज पै टका है॥
एक ही शजर की शाख़ें दो साथ ही में काटी।
इक जल रही अग्नी में एक का बना असा है॥

गाना नं० ७

शोर है हरसू कि हिन्दोस्तान वाले मिटगये।
दोस्तों की शान बनकर शान वाले मिटगये।
ढूँढ़ लो उनकी भी क़ब्रें अपने महलों के क़रीब।
चार दिन की बात है बलकान वाले मिटगये॥
किस हवा में उड़ रहे हो देखलो ऐ ग़ाफ़िलो।
आसमां पर पहुंचकर यूनान वाले मिटगये॥
तुम तिजारत की इमारत को अटल समझा करो।
एक ही भूचाल से जापान वाले मिटगये॥

गाना नं० ८

क़ौम को ज़िंदा करेंगी पहन खद्दर बीबियां।
बीबियां शौहर बनेंगी और शौहर बीबियां॥

चूड़ियां अब पहन घरमें बैठ जायें मर्द सब।
हिन्द को जिन्दा करेंगी देके लेक्चर बीबियां॥
लड़ रहे हिन्दू मुसलमां दोनों आपस में यहां।
मेल दोनों में करायें फिर मुकर्रर बीबियां॥
सोगये हैं मर्द अबतो देबियां हैं जग गईं।
फूँकदेंगी फूट का मिलकरके बस घर बीबियां॥
होंगी अब आज़ाद बीबी वीर पुरुषों की तरह।
लड़ेंगी मैदान में बस बांध लंगर बीबियां॥
जंग आज़ादी की जीतेंगी बहुत ही जल्द ये।
अब दिखायेंगी तुम्हें कुछ दिनमें जौहर बीबियां॥
जाँयँगी अमरीका, लंदन, जर्मनी, जापान में।
बनेंगी प्लीडर, बैरिस्टर, औ गवर्नर बीबियां॥
कौंसिलों में जायँगी बाँपर अड़ेंगी खूब ही।
हिलादेंगी कौंसिलें बन कर बैरिस्टर बीबियां॥

गाना नं० ६

नौजवानो वक्त है मिटजाओ क़ौमी आन पर।
देखना बट्टा न लगजाये वतन की शान पर॥
खिरमने हिन्दोस्तां पर बिजलियां टूटा करें।
हैफ़ गर फिर भी न जूँ रेंगे तुम्हारे कान पर॥
चहचहाना भूल जाओगी चमन ख़तरे में है।
बुलबुलो क्या देखती हो खेलजाओ आन पर॥

क़फ़स से आज़ादी को राहों का पता लग जायगा।
गर निगाह डाला ज़रा तुम चीन और जापान पर॥
ख़बरदार रफ़्तार चक्कर में न आजाये कहीं।
डालता है हाथ अर्जुन भीम की सन्तान पर॥

गाना नं० १०

इक लहर चलादी भारत में, इन गांधी टोपी वालों ने।
"स्वाधीन बनो" यह सिखादिया इन गांधी टोपी वालों ने॥
"अब मेल करो आपस में तुम, जंजीर गुलामी की तोड़ो।"
माना गांधी का कहना यह इन गांधी टोपी वालों ने॥
है विकट समस्या आगे जो, उसको भी हल करना होगा।
ज़रिया बस एक निकाल लिया, इन गांधी टोपी वालों ने॥
युवकों के हृदय दुलारे हैं, आंखों के प्यारे तारे हैं।
चुन लिया जवाहर को अपना, इन गांधी टोपी वालों ने॥
ख़ुश हुआ 'दग्ध' यह सुनकरके स्वाधीन बनेगा भारत अब।
विश्वास दिलाया ऐसा ही, इन गांधी टोपी वालों ने॥

गाना नं० ११

चलादो चरखा हरएक घर में, ये चर्ख़ तब तुम हिला सकोगे।
बँधा तभी सिलसिला सकोगे, उन्हें कबड्डी खिला सकोगे॥
हमारे चरखे में ऐसा फ़न है, जो आजकल की मशीनगन है।

वह मैन्चेस्टर औ लंकाशायर का, जीत इससे क़िला सकोगे ॥
रुई न भारत की हो रवाना, बने स्वदेशी का ताना बाना।
इसी तागे से विदेशी वाणिज्य को, आप फांसी दिला सकोगे ॥
न पट विदेशी का लो सहारा, शरीर चाहे रहे उघारा।
बचे बहत्तर करोड़ रुपया, तब अपने बच्चे जिला सकोगे ॥
मिलालो भाई गले लगा के, स्वदेश का तुम सबक़ पढ़ा के।
विदेशी चीज़ों को दो हटाके, तो चैन 'देशी' बजा सकोगे ॥

बहिनों का शृङ्गार

गाना नं० १२

बहिनों! चरखे से हार शृङ्गार है।
चरखा कातो तो बेड़ा पार है॥
चरखा फूकेगा माल विदेशी चरखा कातेगा माल स्वदेशी।
चरखा स्वदेशी की तलवार है।
चरखा कातो तो बेड़ा पार है॥
बहिनों गांधी का फर्मान है, चरखा भारत का कल्याण है।
इसमें आज़ादी का इसरार है।
चरखा कातो तो बेड़ा पार है॥
चर्खा दर्द को नीचा दिखायेगा, चरखा स्वराज्य की राह बतायेगा।
इस से योरुप का बाज़ार है।
चरखा कातो तो बेड़ा पार है॥
इ ससे होंगे बशर ज़ीशार फिर, होगा फ़खरे आलम हिन्दोस्तान फिर
इसी चरखे पै दारो-मदार है।
चरखा कातो तो बेड़ा पार है॥

इति।